16 जून 1878, ख्रीस्त आनन्दित रूथ का बपतिस्मा लूथरन चर्च में हुआ।

5 वर्ष की आयु : बेर्नादेत्त राँची जे जायी गई और लूथरन चर्च के बेथेसदा प्राईमरी स्कूल में उसकी दाखिला करा दी गयी। वहाँ वह पास्टर के

यहाँ रहती थी। उसने उसकी देखभाल अपनी पुत्री की तरह किया।

कुछ समय पश्चात् पास्टर ने उसे बालिका छात्रावास में रख दिया। वह पुत्री पढ़ाई में गंभीर और उद्यमशील थी और दूसरों के लिये एक आदर्श थी।

काथलिक कलीसिया में धन्य कुवाँरी मरियम के लिए भ. क्ति को देखकर लूर्द की माता मरियम की ओर आकर्षित हो गई।

31 जुलाई 1890, में उसने काथलिक विश्वास को स्वी. कार किया, उसी दिन प्रथम परम प्रसाद भी ग्रहण किया और उसे नया नाम दिया गया : मेरी बर्नादेत्त। इसके पश्चात् उसे लोरेटो धर्म बहनों के स्कूल में दाखिला दिया गया। कुछ ही वर्षों में वह धर्मबहनों की सेवा से प्रेरित होती है। बेर्नादेत्त उन्हीं 'मदरों' की तरह अपने देश के लोगों की सेवा करने को सोचती है। उनकी अन्य तीन स्कूल सहेलियाँ : सिसिलिया, बेरोनिका और मेरी का भी वही विचार रहा जिसके लिये वे विवाह करना नहीं चाहती थीं।

पढ़ाई समाप्त होते ही समुदाय के रिवाज/प्रथा के अनुसार बेर्नादेत्त व उनकी अन्य सहेलियों